अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

महादेवी जीकी काव्य में वेदना सेजीवन में समाधान

डॉ.रविंद्रनाथ माधव पाटील
सहयोगी प्राध्यापक हिन्दी
डॉ. खत्री महाविद्यालय तुकूम चंद्रपुर
गोंडवाना विद्यापिठ गडचिरोली म.रा.
ravindranathpatil@gmail

सारां"।

महादेवी वर्मा आधुनिक काल की हिन्दी साहित्य अत्यंत लोकप्रियकवयित्री मानी जाती है। उनकी वेतना प्रसूत रचनाएं हिन्दी काव्य साहित्य के अमरगान के रूपम मान्यताप्राप्त है। इनका साहित्य रूपी मानवोपयोगी विचार आज भी प्रासंगिकहै। जिसमें कविमहादेवी वर्मा का नामप्रमुखता से लिया जाता सकता है।कवयित्री महादेवी वर्मा कासाहित्यिक जीवनअनुभवजन्य विचार एवं कार्य का अतुलनिय भण्डार हैं।हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल को गद्ययुग या जागरण युग के नाम से पहचाना जाता है। विदे"ाी व्यापारी जो बाद में शासक केरूप मे स्थापित हुए। परिणाम स्वरूप नव विचार दृष्टिकोण सर्वागिण परिस्थितियां आदि का प्रभाव भारतवासियों पर अर्थात हिन्दी साहित्य पर पडना स्वाभाविक था। जिससे हिन्दी काव्य साहित्य परप्राचीन एवं नवीन का, अध्यात्म एवं विज्ञान का मिलाप होकर स्वतंत्रता, भक्ति–प्रधान, श्रृंगार प्रधान, दे"ाप्रेम, मानवाधिकार मानव सुधार,सामाजिक समस्या, मानव विकास के स्वर आधुनिक हिन्दी काव्य साहित्य मेंप्रज्वलित होने लगे। ऐसे मे साहित्यकारों ने ब्रजभाषा से खडीबोली जनता की व्यवहारिक भाषा की ओर मार्ग मार्गक्रमण किया और उसे अपने साहित्य लेखन के लिए खुंलकर अपनाया। परिणामस्वरूप अनेक साहित्यकारों ने विविध प्रकार एवं विचारों से हिन्दी काव्य साहितय को समद्ध किया। जिसमें सन 1907 अपने जन्म से ग्यारह वर्ष की आयु से ही महादेवी वर्मा ने 'दीपक' शीर्षक से कविता करके हिन्दी साहित्य में एक 'दीपस्तंभ' की भूमिका निभायी।

''हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु हरि"चंद्र के बाद पं. महाविर प्रसाद व्दिवेदी का आगमन हुआ।आधुनिक हिन्दी साहितय में इनके नाम से भारतेन्दुयुग और महाविर प्रसाद व्दिवेदी के नाम से व्दिवेदी युग जाना जाता है।हिन्दी साहित्य में इसके बाद सन 1920 से आगे भाषा, भाव, शैली, छंद, अलंकार, रस आदि सभी दृष्टियों से इतिवृत्तात्मक विधा के साथ कोई मेल न खानेवाली एक एक काव्य लेखन प्रवृत्ति काउदय हुआ। जिसे आलोचकोंने छायावाद के रूप में नामकरण करके स्वीकार किया। कुल मिलाकर आधुनिक हिन्दी

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

कविता की सबसे श्रेष्ठ रचनाएं इसी युग मे दिखाई देती है। जिसके प्रमुख कवियों में कवयित्री महादेवी वर्मा का नाम मुख्य रूप से वेदना, पिडा, दुःख के रूप में जाना जाता है।जिसमें मानव की अनेक समस्याओं का सार्थक समाधान भी द"र्शन रूप में मिलता है।जो प्रासंगिक एव व्यवहारोपयोगीहै।जो हिन्दी साहित्य संसार की अनुपम नीधि है।जिससे सभी का मानसिक सुधार एवं विकास संभव है। जो एक प्रकार से दृःख में भी सुख का द"र्शन दिखाई देता है।

बीज भाब्द

विरह की वेदना, भावुकता, स्वानुभूति, भक्ति, प्रेम,संवेदना, समाधान, नवीनता, विकास।

प्रस्तावना

महादेवी वर्माआधुनिक हिन्दी साहित्य की लोकप्रिय कविहै।जिन्हें आधुनिक मिरामाना जाता है। महादेवी वर्मा ने गद्य और पद्य दानों विधाओं में लेखन किया। जिसमे अनेक काव्य संग्रह, महत्वपूर्ण प्राचीन रचनाओं का अनुवाद, संस्मरण, रेखाचित्र, आलोचना, कहानियां, निबंध कुछ रचनाओं का संपादन भी किया है। इन्होंने प्रारंभ में ब्रजभाषा में काव्य रचना करतें हुए संस्कृत मिश्रित हिन्दी खडीबोली में भी अनेक रचनाएं लिखी है।

1907 से 1987 ई.स.इनका जीवनकाल रहा है।जो स्वतंत्रता संग्राम और आधुनिक हिन्दी साहित्य का प्रारंभिक युग के रूप में पहचाना जाता है।इनकी माता श्रीमती हेमरानी देवी और दादा ब्रजभाषा के कवि और हिन्दी भाषा सेसंपन्न थे। ऐसे परिवार में होने के कारण उनके घर केई"वर भक्ति आराधना, गीत गायन, लेखन का रिवाज था।ऐसे जन्मजात प्रतिभा के साथ अनुभवन जन्य ज्ञान का भंडार महादेवीजी में दिखाई देता है। साथ ही इनमें भावुकता, संवेदना,भक्ति की आराधना, ई"वर के प्रति अटूट वि"वास, था। इनके काव्य साहित्य में रहस्यवाद, अव्दतवाद, छायावाद प्रकट होता है।इनमेंमानव सुलभ भावना, पीडा, दुःख, मर्मज्ञता, प्रकृति, मानवएवं समस्त प्राणीयों कें प्रति असिम करूणा प्रेम एवं सहानुभूती युक्तमानविय भावनाआदि गुणदिखाई देते है।इस प्रकार इनका जीवन अध्यात्मिक यथार्थ एव मार्मिक दृःखपूर्ण अनुभूति से युक्त है।जो इनके व्यक्तित्व की मूल वि"ोषता वेदना हीहै। हिन्दी साहित्य क्षेत्र में महादेवीजी का काव्य विविध दृष्टियों से श्रेष्ठ समझा जाता है।जिसमे पाठक अपने जीवन का प्रतिबिंब देखता है। अपने सुख–दुःखपूर्ण जीवन की तुलना करते हुए आत्मिक सुख, समाधान और शांतीकी प्राप्ती की ओर अग्रेसर होता है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

महादेवीजी के काव्य केविचार प्रवाहमें मानव का समाधान

महादेवी वर्मा जी के कविता की पृष्ठभूमि स्वाभाविक एवं सुनि"चत दिखाई देती है। मीरा की करूण रचनाएं, भगवान बुद्ध के निर्वाण सिद्धांन्त, स्वामी विवकानंद तथा आर्यसमाजी सिद्धांन्त और भारतीय द"र्निइत्यादि का प्रभाव इनके साहित्य में है।जिससे इनके साहित्य पर रहस्यवाद का आरोप किया जाता है। क्योंकि एक ओर महादेवीजी सगुण काव्य का सृजन करती है तो दूसरी और निर्गुण काव्य का।वह इस सृष्टि को स्वप्न बतलाते हुए ब्रम्ह को निर्विकार मानते हुए समस्त विकारों की क्रिडा–भूमि कहती है। इस सृष्टि को कभी काल–सीमाहीन अर्थांत असीम मानते हुए वह उसे अपनी शून्यता दूर करने के लिए, सृष्टि–निर्माता भी मानती है। इस प्रकार महादेवीजी की अनेक रचनाओं में सृष्टि, स्थिति, प्रलय, संयमन और प्रवे"ा आदि ब्रम्ह के सभी प्रतापों के उदाहरण प्राप्त होते है। जैसे–

हुआ त्यौंसुनेपन का भान, प्रथम किसके उर में अम्लान?और किस ि"ाल्पों ने अनजन, वि"व प्रतिमा कर दी निर्माण।**1**

महादेवीजी ने माना है कि सृष्टि–निर्माण से पूर्व सृष्टि का अस्तित्व न था।सृष्टि अनंत निर्विकार स्थितिमें विकसित हुई। सृष्टि के अभेद के साथ आत्मा–परमात्मा के समान होने की चर्चा भी कई प्रकार से अपने काव्य में करती है।सिंधु को क्या परिचय दे देव! विगडते बनतें वीचि–विलास। क्षुद्र है मेरे बुद्बुद् प्राण, तुम्ही में सृष्टि तुम्हीं में ना"ा।।**1**

महादेवीजी की इन दा"र्निक भावनाओं पर उपनिषदों का प्रभाव दिखता है। जो प्रिय अर्थात ब्रम्ह का निवास ह्दय को मानती है और आत्मा एवं प्रकृति दोनों में उसी ब्रम्ह की छाया देखती है। आत्मा को परमात्मा का अ"ा मानते हुए कहती है कि, वह परमात्मा से पृथक होकर पथ्वी पर आती है और धरती के सुखोंका उपभोग कर, सुख–सौदर्य की सृष्टि करती है, किन्तु वह परमात्मा के विरह में विकल भी रहती है। स्वयं परमात्मा को ही अपना प्रियतम मानकर उसे अपना सर्वस्व अर्पण करती है। उस अज्ञातअसीम की भक्ति में खूद को भी भूल जाती है। अपने शरीर और जीवनको ही ई"वर का निवास है, मंन्दिर है।

''क्या पूजन क्या अर्चन रे! कविता में कहती है कि,उस असीम का सुंदर मंन्दिर मेरा लघुतम जीवन रे! मेरी श्वासे करती रहतीनित प्रिय का अभिनंदन रे!**2**समाज में फैले हुए अंधवि"वास को भी कभी नकारते हुए

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

दिखती है। क्या पूजन क्या अर्चन रे! मेरा सुंदर जीवन ही परमे"वर का मंन्दिर और मेरा शरीर जीवनयापन करतेहुए निरंतर प्रिंय का अभिनंदन करते रहता है।

स्वयं परमात्मा भी उसके प्रति आकृष्ठ होकर अंन्त में उसका संकेत पाकर आत्मा उसमें ही लीन हो जाती है। महादेवीजी ब्रम्ह एवं आत्मा दोनों का अस्तित्व स्वीकार करती है। साथ ही महादेवोजी जीवात्मा की महत्ता की भांति प्रकृति का महत्व भी मानती है।जीवन की वेदना में, पीडा में, चिर वि"ाल प्रकृति सुंदर ब्रम्ह का आभास महसूस करती है। इस प्रकार महादेवी जी की कविताओं में सगुण निर्गुण दोनों प्रकार की दा"ंनिक भावभूमि का चित्रण हुआ है। जो मानव के मन में ई"वर और प्रकृति के प्रति उठने वाले सगुण निर्गुण विचारों का समाधान करते है। जिससे मानव अपनी प्रवृत्ति नुसार अपने विचार व भावनाओं पर स्वयं अंकु"ा लाकर ई"वर और प्रकृति में सामजंस्य निर्माण कर सकें।एक तो ई"वर का सगुण रूप स्वीकार करें या फिर निर्गुण।मानवजीवन में ऐसे किसी शक्ति को स्वीकार करें और सभी समस्याओं का समाधान स्वयं कर सकें। अच्छे बुरें सभी कर्मो का परिणाम मानव को इसी जीवन में मिलता है। और उसके सारे समस्याओं का समाधान ई"वर या प्रकृति के पास है। जो मानव को प्रकृति ने पहले ही मन, भावना, शरोर, बुद्धि, चेतना आदि जीवन रूपी शक्ति के रूप में बहाल किया है।

और वेदना पीडा में ही मानव का जीवन विकास अनेक समस्याओं का समाधान

हिन्दी साहित्य संसार मे महादेवी वर्मा जी को करूणा और दुःख पीडा और वेदना की कवयित्री के रूप में पहचाना जाता है। जिन्होंने स्वयं 'यामा' की भूमिका मे यह स्वीकार किया है–''दुःख मेरे निकट जीवन का ऐसा काव्य है, जो सारे संसार को एक सूत्र में बांध डालने की क्षमता रखता है। हमारे असंख्य सुख हमें चाहें मनुष्यता की पहली सीढी तक भी न पहुॅचा सकें किन्तु हमारा एक बूॅद ऑसू भी जीवन को अधिक मधुर, अधिक उर्वर बनायें बिना नहीं गिर सकता। मनुष्य सुख को अकेला भोगना चाहता है, परंतु दुःख सबको बॉटकर–वि"व जीवन में अपने जीवन को, वि"व वेदना में अपनी वेदना को इस प्रकार मिला देता जिस प्रकार एक जलबिंदू समुद्र में मिल जाता है, कवि की माक्ष है।'' इससे महादेवजी की काव्य–कृतियों में स्वाभाविक ही वेदना का उपयुक्त विकास उपलब्ध होता है और सच तो यह है कि हिंन्दी के छायावादी कवियों मे एकमात्र उन्होंने ही वेदना के चरम् विकास को अंकित किया है। जो विरह का जलजात जीवन कविता में उजागर होता है– विरह का जलजात जीवन,

विरह का जलजात। वेदना में जन्म, करूणा में मिला आवास; अश्रु चुनता दिवस इसका, अश्रु गिनती रात।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

जीवन विरह का जलजात।**3**इस कविता में कवयित्री जीवन का जन्म ही वेदना मानती है। और उसे करूणा में आवास सहारा संरक्षण विकास भी वेदना में ही प्राप्त हुआ यह बतलाना चाहती है। अर्थात दुःख वेदना यह हमारे जीवन का स्थाई भाव है। जिसे सहन करने से, जिसका सामना करने से अंत में अपार समाधान प्राप्त होता है।'' महादेवी वर्मा की कविताओं में वेदना का विभिन्न रूप देखने को मिलताहै। उसकी श्रृंखला की कडियां 'स्त्री' स"ाक्तिकरण का सुन्दर उदाहरण है। जिसमें नारी जागरण एवं मुक्ति का सवाल को उठाया गया है।'' **4**जैसे पीडा उपरान्त सुख उसी प्रकार वेदन जितनी भारी होगी सुख भी उतना ही मिलेगा। मेरे दीपक कविता में '' मधुर मधुर मेरे दीपक जल ———पुलक पुलक मेरे दीपक जल''संदे"ा देती है कि हे मेरे प्राण, हे मेरे जीवन दीप तू मधुर–मधुर अर्थात कोमल भाव के साथ धीरे–धीरे जलता रह। जिस प्रकार दीपक धीरे–धीरे लगातार जलता रहता है और संसार में लगातार प्रका"ा फैलाते रहता है, उसी प्रकार तू भी युगों तक प्रति क्षण, प्रति दिन, प्रतिपल जलता हुआ अपने प्रका"ा से प्रियतम का मार्ग आलोकित करता रहता है। अर्थात स्वयं को जलाकर, जीवन का सदुपयोग कर ले। फिर चाहें वह वेदना से भरा ही क्यों न हो? दूसरों को प्रका"ा देना यह अनेक समस्याओं का समाधान करता है।मन को अपार शांती सुख समाधान मिलता है। जिसमें मानव जीवन में सर्वागिण विकास के रास्तें में आनेवाले सभी मानविय दूषित, विना"ाकारी प्रवृत्तियों का ना"ा है।महादेवीजी मानव जीवन में करूणाको भी महत्वपूर्ण समझती है।जिसका स्थायी भाव वेदना हो सकता है। जो मानव का जन्मजात गुण है, जिसके मानव अपना जीवनयापण अच्छी तरह से कर सकता है। करूणा का रूप अति विस्तारित है। जैसे व्यक्तिगत करूणा, सांसारिक करूणा, मानव समाज के प्रति करूणा, प्राणीमात्र के प्रति करूणा ऐसे अनेक प्रकार गिनाएं जा सकते है। उसी प्रकार करूणा करने वाला और करूणा प्राप्त करने वाला दोनों को लाभ प्राप्ति होती है। उसी प्रकार वेदना भी विस्तारित और सर्व व्यापी है। जिसके सिवाय हम जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते। उसका स्वागत करने से उसे सहने के उपरान्त सुख समाधाान और शांती प्राप्त होती है। जैसे''सब बुझे दीपक जला लूॅ ''कविता में महादेवीजी कहती है कि,अब तरी पतवार लाकरतुम दिखामत पार देना, आज गर्जन में मुझे बस एक बार पुकार लेना। ज्वार को तरणी बना मैं इस प्रलय का पार लूॅ। आज दीपक राग गा लूॅ।**4**

महादेवीजी वेदना से पार होना ही नहीं चाहती। महादेवीजी ने वेदना कास्वीकार हर तरह से किया है। और वेदना को नष्ट न करते हए दुःख वेदना में अपना समाधान और जीवन का अर्थ खोजती है। वेदना रूपी अतृप्ति में ही आनंद रूपी तृप्ति का अहसास महादेवीजी प्राप्त करती है। सच में यही जीवन है। ऐसा

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

महादेवोजी का दृढ विचार है।वैसे ही 'मधु बयार' कविता में कवि मधुर परंन्तु मादकतापूर्ण इस बयार में प्रियतम का साक्षात्कार करने हेतु श्रृंगार आव"यक मानती है। प्रियतम का प्यार पाने के लिए उसे आकर्षित करने के लिए ही नहीं वरन् अपने मन की प्रसन्नता को उचित ढंग से पूर्णरूप से प्रकट करने के लिए आव"यक है कि मन की उदासीनता, निरा"ाा, वेदना और दुःख का कोई भी चिन्ह दृष्टिगत न हो। इससे हम यह संदे"ा ले सकते है कि जीवन में हमे"ाा सकारात्मक भावना से हॅसी खु"ाी से अपना कार्य करने से अनेक प्रकार की समस्याओं का समाधान हमें प्राप्त होता है।

निष्कर्ष

महादेवी वर्मा की कविताओं का केंद्र मानविय वेदना है। जिसमें मानव जीवन का प्रेम और आत्मिक सुंदरता के लिए परम् जिज्ञासा भरी है। ''दुःख और विरह की मर्मस्प"ार्ी भाव–व्यंजना महादेवी के काव्य की आत्मा है। इनकी प्रकृति वियोगिनी है और उनके भाव–जगत में पूर्णतया समाविष्ट हो चुका है।'' **6**जीवन में अनेक प्रकार की तकलिफें आती है उससे वे कणभर भी विचलित न होते हुए उसका स्वागत करते हुए, उससे दो दो हाथ करके जिस स्थिति में वह समस्या ह उसे स्वीकार करती है। दुःख वेदना पीडा आदि की निरा"ाजनक परिस्थिति से भी सकारात्मक विचार करते हुए अपनी राह निकालती है। यही संदे"ा वह प्रत्येक मानव के लिए देना चाहती है। साथ ही मानविय करूणामय भावना में निरा"ाजनक अवसाद की अपेक्षा सकारात्मक व्यथा की आर्द्रता में सेवा त्याग समर्पण संकल्पभरा जीवन अपनाए तो उसमें ही बाधाओंको सहन करने की शक्ति और लोक–कल्याण की भावना समाई हुई रहती है। अर्थात वेदना पीडा आदि का सकारात्मक रूप में स्वीकार करने से उससे दो दो हाथ करने से ही हम जीवन के पार जा सकते हैं अर्थात सही तरह से जीवन जी सकते है। यही जीवन है और सारी समस्याओं का समाधान भी यही है। जीवन में जो जो अमारे हिस्से में आता है उसका स्वीकार करों चाहे वह अच्छा बूरा दर्द वेदना पीडा ही क्यों न हो उसमें ही हमारे सारी समस्याओं का समाधान है हमारा विकास है। जो महादेवी ने हिन्दी साहित्य संसार को अनुपन निधि के रूप में दिया है। जिसे अपनाकर ही हम हमारा समाज, हमारा दे"ा अर्थात सबकुछ सरल–सहज, सफल कामयाब और विकसित हो सकते है। वेदना सहन करने के उपरान्त हमें अतिव समाधान प्राप्त होता है। जैसे किसी स्त्री को अपार वेदना सहकर ही मॉ का वरदान प्राप्त होता है उसी प्रकार हर मानव को वेदना का सामना करने पर उसे सहने पर ही अपार सुख समाधान और शांती प्राप्त हो सकती है। इस वेदना को महादेवी वर्मा जी ने अपने जीवन में भोगा है और उसमें ही स्वयं के

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

जीवन में शांती प्राप्त की है। उसी प्रकार का महादेवीजी का साहित्य भी है। जो पाठकों को पढने पर जीवन समाधान प्राप्त कराता है।

संदर्भ

1. आधुनिक कवि 1रीगल बुक डिपो, नई सडक,दिल्ली–6प्रथम संस्करणः 1994, पृष्ठ कं. 78

2.हिन्दी काव्य सरिता–संम्पादक निर्मला गुप्ता–प्रका"ाक युरे"िाया पब्लि"िंग हाउस प्रा.लि.रामनगर, नईदिल्ली110055–पुनःमुद्रित 1990, पृष्ठ कं.65

3. और 5काव्य कुसुम काव्य संग्रह–संपादन प्रो. डॉ. श्रीमती माया सिंह–जयभारती प्रका"ान इलाहाबादसंस्करण सन 1995 पृष्ठ 23, 24

4. हिन्दी लेखिकाओं के कथा साहित्य में नारी जीवन–डॉ. मनीषा–प्रका"ाक वान्या पब्लिके"ांस 3 ऐ/127आवास विकास, हंसपुरम् नौबस्ता, कानपुर–208021प्रथम संस्करण 2021–पृष्ठ कं. 14

6. काव्य कुज भाग–3 परिवर्तित संस्करण–1980 प्रका"ाक व्दारकादास वेद मन्त्री राष्ट्भाषा प्रचार समिति, वर्धा, जनवरी 1993 महादेवी वर्मा का परिचय पृष्ठ 95.